

चतुराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषिक उत्तराखण्ड (प्रौद्योगिक)

हाइस्कूल परीक्षा "A"
(उत्तराखण्ड) 10 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर

नोट-परीक्षार्थी उत्तरपूर्ति-का के किसी भी गलत में अपना ना लेकर का चाग न दिये।

नोट-केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुरितका के किसी भी चाग पर न लगाएं।

ब) उत्तर पुरितका की संख्या— ल. १ ल. २ ल. ३ ल. ४

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक-

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा—

परीक्षक, जिन लम्बिका वे प्रत्येक प्रश्न तथा उत्तर के अंको के प्रत्यक्षीका का विवरण यथास्थान गरें।

अनुक्रमांक (अंको में)-

प्रश्न
संख्या ल. १ ल. २ ल. ३ ल. ४ ल. ५ ल. ६ ल. ७ ल. ८ ल. ९ ल. १० योग

अनुक्रमांक (शब्दों में)-

01

विषय-

02

प्रश्नपत्र संकेतांक-

03

परीक्षा का दिन-

04

परीक्षा तिथि-

05

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाए-

06

केन्द्र संख्या-

07

परीक्षा कक्ष संख्या-

08

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा

रायधारीपूर्वक कर ली गई है।

कक्ष निरीक्षक का नाम-

09

दिनांक-

10

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक-

11

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुरितका का मूल्यांकन सम्पूर्णतः प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुख्यपृष्ठ पर अवसरण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरपूर्ति रहूँगा। (मेरी)

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या...

12

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

13

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

14

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

15

सन्निरीक्षा पूर्व अंक-

16

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक-

17

त्रुटि का प्रकार-

18

दिनांक-

19

हस्ताक्षर निरीक्षक-

20

गोप (शब्दों में).....

*योग (अंको में).....

खण्ड - 'अ'

प्रश्न सं० - ०१ के 'क' का उत्तर :-

हिमालय कहने पर मारतवर्ष की भौगोलिक सीमा का ही केवल समझा नहीं होता अपितु भारत की पवित्रता का, ऊँचाई का भी समझा (बोध) हीता है।

प्रश्न सं० - ०१ के 'ख' का उत्तर :-

राजा पृथु ने पृथ्वी की इभलिष डराया- घमकाया क्योंकि पृथ्वी के बंजर होने के कारण, प्रजा दुःख से पीड़ित होने लगी थी, दैवतओं के यक्ष भाग मिलना कठिन होने लगा था, उसके पश्चात राजा पृथु ने पृथ्वी की डराया- घमकाया,

प्रश्न सं० - ०१ के 'ग' का उत्तर :-

हिमालय 'आत्मदान' में विश्वास करने वाली संस्कृति' का अवाहन है।

प्रश्न सं० - ०१ के 'घ' का उत्तर

पर्वतराज हिमालय का बड़पन केवल नगाधिराज हीन के कारण नहीं है अपितु उसका बड़पन गंगा जैसी नदियों की जन्म देने के कारण है,

प्रश्न सं०-०१ के (इ.) का उत्तर :-

उपर्युक्त गंगावा का उपर्युक्त शीर्षक
(देवात्मा हिमालय का महव)

प्रश्न सं०-०३ :-

रामनगर
(नैनीताल)

दिनांक :- ३०३२०२०

प्रिय मित्र, आस्था

मर्जनीह नमस्कार, मुझे टैलीफोन माध्यम
से ज्ञात हुआ कि तुम इस वर्ष अपनी
कक्षा एवं सम्पूर्ण विद्यालय में प्रथम
आयी हों और आपने अभी विषयों में
सर्वोच्च अंक प्राप्त करके अपने माता-
पिता एवं परिवार के अभी बन्धु बान्धवों
को खौरवानित किया है।

जिससे आपके माता-पिता का सीना गर्व
से चौड़ा हो गया है।

मैं अपने इस देवी-देवताओं से प्रार्थना
कर्तृती कि, तुम प्रतिवर्ष इसी तरह
अपनी कक्षा व अपने विद्यालय में सर्वोच्च
अंकों से उत्तीर्ण हो।

मेरे माता जी- पिताजी की ओर से आपको
दूर सारी बद्याईयाँ कि तुम अपने माता-
पिता व अपने कुल का नाम इसी प्रकार
से उच्चवालित करें, इसी तरह तुम
विद्या के क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में
प्रगति की ओर अग्रसर रहों,

अंत में मेरी तरफ से अपने माता-पिता व
परिवार के बन्धु बान्धियों को स्वेच्छा नम्रकार
ओर आपकी दूर सारी बद्याईयाँ,

सद्यन्यवाद

आपकी प्रिय सहेली
क ख ग

प्रश्न सं०-०४ क्रियापद हाँटिय,

प्रश्न सं०-०४ का 'क'

विद्यार्थी परीक्षा भवन में जा रहे हैं,

क्रियापद :- जा रहे हैं,

उसका भैद :- सकर्मक क्रिया व समापिका
क्रिया

प्रश्न ०४ का 'ख'

वह पानी पी रहा है,

उत्तर :- क्रियापद :- पी रहा है।

क्रिया का शब्द :- सकर्मक क्रिया व
भमापेका,

यथा निर्देश उत्तर लिखिए -

प्रश्न सं० - ५ का 'ग' (क्रिया विशेषण
टॉटकर लिखें)

(ग) दात्र द्यान पूर्वक पढ़ते हैं,

उत्तर :- क्रिया :- पढ़ते हैं।

क्रिया विशेषण :- द्यान पूर्वक

प्रश्न सं० - ५ का 'घ' (समुच्चय
बोधक)

(घ) बैल से जाने की अपेक्षा तुम
कार से चले जाओ,

समुच्चय बोधक शब्द :- अपेक्षा

क्योंकि अपेक्षा शब्द एक वाक्य की दूसरी

वाक्य से जीँने का कार्य क्य रहा है,

प्रश्न सं-5 (यथा-निर्देश)

'क'

(क) 'जिन विद्यार्थियों ने परिष्रम किया वे अलीर्ण ही गए,' किस प्रकार का वाक्य है,

उत्तर:- मिश्र वाक्य

प्रश्न सं-5 का 'ख'

(ख) प्रश्नवाचक वाक्य,

उत्तर:- तुम क्या कर रहे हो?

प्रश्न सं-5 'ग' :-

(ग) अशीक पुस्तक पढ़ता है, (कर्मवाच्य में)

उत्तर:- अशीक के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है

प्रश्न सं-5 का 'घ'

(घ) अमित से दौड़ा नहीं जाती है, (कृत्ववाच्य)

उत्तर:- अमित नहीं दौड़ता है,

प्रश्न सं०- 6 का 'क'

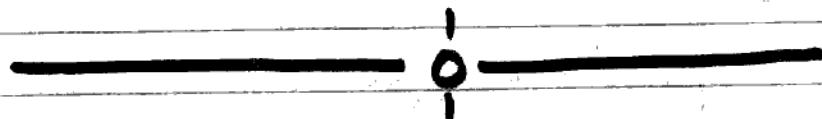
(क) निम्नलिखित शब्दों में से 'तारा' शब्द का अर्थ :-

उ०:- नक्षत्र।

प्रश्न सं०- 6 के 'ख'

(ख) 'चन्द्रमा' का पर्यायिकाची शब्द बताइये

उ०:- चाकेश।



प्रश्न सं० ७ का 'क'

क) गोपियों के लिए 'हारिल की लकड़ी' कौन है और किस रूप में? स्पष्ट कीजिए?

उ०:- गोपियों के लिए 'हारिल की लकड़ी
श्रीकृष्ण है।

जिस प्रकार हारिल पक्षी किसी लकड़ी की अपने पंजों में दबाता रखता है,
और सदैव उसको अपने साथ रखता है,

उसी प्रकार गोपियों भी अपनी तुलना हासिल पक्षी से करती है कि हम गोपियों ने श्री - भी कृष्ण की मनमोहक अपने मन, मार्गिक में ध्यान कर (दावे) ली है, इसीलिए हम सदैव श्री कृष्ण का ही आत्म जपती है और उन्हें अपन बास्तुष्य उपास्येत मानती है।

प्रश्न नं.-५ का 'ख'

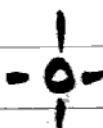
(ख) गोपियों की 'ककड़ी ककड़ी' की तरह क्या लगता है और क्यों?

उत्तर:- गोपियों की 'ककड़ी ककड़ी' की तरह श्री कृष्ण द्रवूरा श्रीजवाणी गति उद्योग के माध्यम से योग साधारण के उपदेश लगती है जिस प्रकार कि भी व्याकरण में मुह में ककड़ी ककड़ी आने पर उसके सुख का विवाद बदल जाता है। उसी प्रकार गोपियों की यह योग सन्देश की बातें सुनकर उनका दुःख और गहरा ही जाता है। इसीलिए गोपियों का योग सन्देश की बाते ककड़ी ककड़ी से समान लगता है।

प्रश्न नं.-६ का 'ग'

(ग) गोपियों के लिए 'व्याधि' का आशय क्या है।

30:- गोपियों के लिए व्याधि का आशय एक शारीरिक बीमा है जिसके बीमा में गोपियों ने नहीं ही कभी सुना वा ना ही कभी देखा था, गोपियों के लिए व्याधि ऐसी कृष्ण द्रवरा भ्रिजवास गच्छ योग साधना से है जो उनके लिए शारीरिक बीमा है।



प्रश्न सं-४ का 'क'

(क) राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद में परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने घनुघटन के लिए कौन - कौन से तर्क दिए?

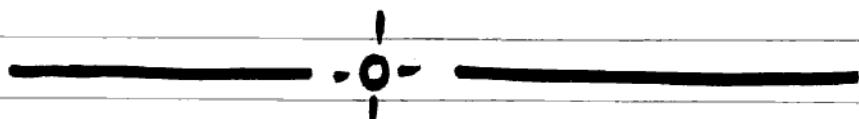
उत्तर :- राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद में लक्ष्मण ने घनुघटन के लिए निम्नलिखित तर्क दिए।

लक्ष्मण ने घनुघटन का भर्वप्रथम कारण घनुघट का पुराना होना बताया जिसके कारण श्री राम जी ने उसी नया सुमझकर घोष्य की अठा लिया जिससे उनके हुते ही

घनुष दृट गया,

लक्ष्मण जी ने कहा है देव ! हमने तो
बाल्यावस्था में ऐसी अनेक घनुष तोड़े
हमरि नजर में तो सभी घनुष समान हैं
फिर भी आपकी इस घनुष के
प्रति इतनी श्रद्धा व ममता क्यों है ?

इसी प्रकार लक्ष्मण जी ने घनुष दृटने पर
अनेक प्रकार के तर्क दिए,



प्रश्न सं-०४ का 'ख'

(ख) 'अट नहीं रही है' कविता के आधार
पूर फागुन की आशा का वर्णन
अपने शब्दों में कीजिए ?

उत्त:- 'अट नहीं रही' कविता में कवि ने
फागुन की सुन्दरीता का वर्णन
किया है, कवि कहते हैं फागुन की
सुन्दरता इतनी मनमोहक व आकाषत
करने वाली है जो पृथ्वी में नहीं
समापा रही है अपितु फागुन की
आशा ब्रह्मोदल के चारों ओर
मृदु सुगंध की आंति विखरी उझे है

'अट नहीं बही है' कविता में कवि
ने फागुन की सुन्दरता का मानवीकरण
किया है, जिसमें फागुन ने
शरीर धारण किया है और उसका
स्वागत पैदा की लदी डाल लाल-
हरे फूलों की माला के ऊपर में
भव बहे हैं।

फागुन की मौसम में चाहें और
उत्साह और हृषिक्षण विखरा होता
है।

-०-

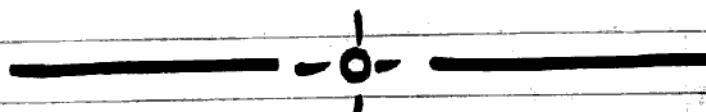
प्रश्न सं०-७ का 'क'

क) कवि आत्मकथा लिखने से क्यों
बचना चाहता है?

उ०:- कवि आत्मकथा लिखने से
इसलिए बचना चाहता है कि
कावे कहता है कि मेरे जीवन में
अनेक दुःख व सुखों ने प्रवृत्ति
किया है परन्तु उनमें से कोई
श्री, किसी श्री पाठक के लिए
घटना प्रेरणादायी नहीं है अपितु
सर्वार्थ मात्र की घटनाएँ हैं।

उनकी पठकर के किसी श्री पाठक

की लाभ नहीं पहुँचेगा।
तथा कवि जंयशक्ति प्रभाव जी कहते हैं
कि इस संसार में मुझमे सौ श्री आदिक
ओग हैं जो आत्मकथा लिखने के योग्य
हैं। मैं अपनी आत्मकथा लिखने योग्य
नहीं हूँ।
इसीलिए कवि अपनी आत्मकथा लिखने
से बचना चाहता है।



प्रश्न सं०-१ का ख

(ख) बच्चे की दंतुरित मुखकान का कवि
के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उ०:- बच्चे की दंतुरित मुखकान को देखकर
के कवि के हृदय पठल पर प्रतिकूल
प्रभाव पड़ता है। कवि उस नहीं
बालक की दंतुरित मुखकान को देखकर
उसे अपलक देखता रहता है।

और जिसके काना कवि का कठोर मन
कीमल हृदय में परिवर्तित हो जाता
है।

बालक को देखकर कवि कहता है इस
झोपड़ी जलजात खिल उठा हो।
कवि कहता है कि इस बच्चे की

दंतुरित सुनकान् किमी सूतक में भी
जान डाल देती है।

:- :-

प्रश्न सं० - १० का 'क' का उत्तर

प्राचीन भारत में स्त्री शिक्षा की परम्परा वही थी, अत्रि की पत्नी पत्नी धर्म पर व्याख्यान देते समय घृणों पाठिय करके, तथा गार्ही बड़े - बड़े ब्रह्मवादियों की हसा दें, माडन मिश्र की सह धर्मचारिणी शंकराचार्य के हक्के हुड़ा दें। इस प्रकार हमारे प्राचीन भारत में स्त्रियों को पढाना का चलन था,

प्रश्न सं० १० का 'ख' का उत्तर

ख)उत्तर :- स्त्रियों को पढाना कालकृष्ण और पुरुषों को पढाना पीयूष का 'धूट', इस कथन से कावे का आवाय है कि हमारे समाज में स्त्री व बालिकाओं को पढाना अनर्थकारी समझा जाता है और इसकी तुलना में

पुक्खों की पढ़ाना कुल का चिराग गीर्वान
—कैसा माना जाता है। कुटुंब काटिवादी
धारणा वाले लोग चित्रियों का धूप की
वार दिवारी तक ही सीमित रखते हैं।
परन्तु आद्युनिक भाषत में अश्री व पुक्खों
में सम्बान्धित भागयी हैं चित्रियों की श्री
पढ़ाना पीयुध का धूट व पुक्खों की श्री
पढ़ाना पीयुष का धूट, "मौन जाने लगा है।

—०—

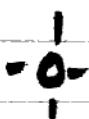
प्रश्न सं० - ॥ का 'क'

क) 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें क्या
सन्देश देती है?

उ०:- 'नेताजी का चश्मा' कहानी हमें
बहुत प्रेरणादायी सन्देश देती है,
कहानी में कैप्टन (चश्मे वाले) के
दुवारा देवाभिमुक्ति व शब्दप्रेम की भावना
का जन संचार किया गया है।

इस कहानी में लेखक 'स्वयं प्रकाश'
जी कहते हैं कि हमें अपने देश के
महापुक्खों व सेनानियों का मान सम्मान
तथा उन्हीं भावना रखनी चाहिए।

हमें अपने देश के प्रति निष्ठावान्
तथा कर्मनिष्ट होना चाहिए अगर
हम किसी महापुरुष के प्रति
श्रद्धान रखें तो हमें पाठ के जैसे
मूर्ति लगाकर किसी श्री प्रकार
का श्रद्धहित के प्रति आड़म्बर नहीं
करना चाहिए,



प्रश्न सं० ॥ का 'ख'

ख) बालगीविन भगत की कबीर पर^{३०} श्रद्धा किन - किन रूपों में व्यक्त
हुई ?

उ०:- बाल गीविन भगत की कबीर
के प्रति श्रद्धा निर्णयालिखित तथ्यों
के आधार पर व्यक्त हुई।

बाल गीविन भगत कबीर के जैसे
कबीर पंथी दीका लंगान थे तथा
सिर पर सामानदी दीका लंगाते थे

जिस प्रकार कबीर धार्मिक मान्यताओं
तथा सामाजिक मान्यताओं पर विवरण
नहीं करते थे उसी प्रकार बाल

गीविन भगत श्री सामाजिक मान्यताओं
पर विश्वास नहीं करते हैं।

फसल की उगाई के पश्चात् बोल्डगीविन
भुगत के व्यवहार अनुसार वे पूरी फसल
की क्षेत्र मठ में चढ़ा देते तथा जो
प्रसाद के रूप में मिलता उससे ही
परिवार का पालन पोषण करते।

-०-

प्रश्न सं०-१२ का 'क'

(क) 'एक कहानी यह श्री' की लेखिका
का नाम बताइये, लेखिका के व्याकृति
त्व पर किन - किन व्याक्तियों का प्रभाव
पड़ा?

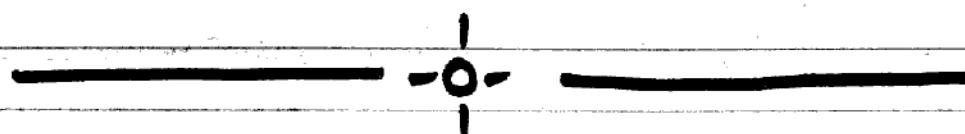
उ०:- 'एक कहानी यह श्री' की लेखिका
'मनु प्राणी', जी है लेखिका के
व्याकृतित्व पर निम्नलिखित व्यक्तियों
का प्रभाव पड़ा।

लेखिका के व्यकृतित्व पर सबसे अधिक
प्रभाव उसके पिता का पड़ा जिस प्रकार
लेखिका के पिता एक अच्छे राजनीतिज्ञ
ये उसी प्रकार लेखिका के मन में

उपने पिता के द्वारा कुठा, प्रति
दा का आव जारूत हुआ जिसके
द्वारा लैखिका कुशल बाजनीति
हुई।

उसके पश्चात लैखिका के व्याक्तिगत
में उनकी प्राध्यापक 'झीला अग्रवाल'
का श्री प्रभाव पड़ा, लैखिका 'सावित्री
गर्भ बूल' में पढ़ती थी जिसके
काषण उनकी प्रधानचार्य झीला
अग्रवाल के द्वारा एक कुशल
साहित्यकार बनने की प्रेरणा
मिली।

लैखिका के व्याक्तिगत पर उनकी
सा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि
लैखिका की बहुत साधारण प्रवृत्ति की
महिला थी,



प्रश्न सं- 12 का 'ख'

ख), कुट्ट पुरातन, पंथी लोग बिरियाँ की शिक्षा
के विरोधी थे, द्विवेदी जी ने क्या 2
तर्क दिया,

उदाहरण :- कुछ पुरातन पंथी लोगों ने स्त्रियों की विरोध में तक दिख उन सभी उदारवादी धारणा वाले व्यक्तियों की मुँह तोड़ जवाब देने के लिए हिवेदी जी ने निम्नलिखित दिये,

०१) हिवेदी जी का मानना है कि अगर प्राचीन काल में स्त्रियों की पढाने की परम्परा नहीं थी तो पुरुषों की पढाने को परम्परा भी नहीं रही हो

प्राचीन काल में बत्री की शिक्षा देने का चलन था, क्योंकि उस समय सभी लोग संस्कृत भाषा में बोली करते थे तो संस्कृत विद्वानों की भाषा हो तो स्त्रियों को भी संस्कृत भाषा का ज्ञान कर या,

स्त्रियों की पढाने के बहुवर्धन में हिवेदी जी उदाहरण के लिए शाकुन्तला ने संस्कृत में इलीक की रचना की तथा आत्री की पली धर्म का व्याख्यान देती थी, मंडन मिश्र की महाधर्मचारिणी ने शंकराचार्य के द्वारा हुआ दिक,

इस प्रकार हिवेदी जी ने अनेक तर्कों के द्वारा स्त्रियों की पढाने का समर्थन किया,

प्रश्न सं '13' का 'क' का उठ

उ०:- माँता के अंचल पाठ में
माता पिता का बच्चे के
प्रति जी वास्तव्य प्रकट हुआ वो इस
प्रकार है।

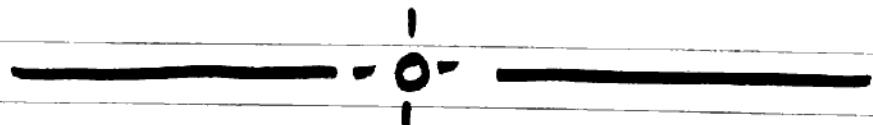
श्रीलानाथ अपने पिता से अधिक स्नेह
करते थे तथा वे अपने हर दैनिक
क्रियाकलाप अपने पिता के साथ
ही पूर्ण करते थे, श्रीलानाथ के
पिता उसे कबड़ी एवं उन्नय खेल
खिलौत और स्वयं हाथकूप उसका
विश्वास बढ़ाते, बालक को खड़ा
मीठा चुम्मा देते
फिर श्री श्रीलानाथ विपलि के समय
अपने पिता के पास न जाकर अपनी
माता के पास जाता है क्योंकि
उसे जान था कि विपलि के समय
माता से अधिक पीड़ा और कोई
नहीं समझेगा,



प्रश्न '13' का 'ख' का उठ:-

उ०:- जॉर्ज फंचम की नाक पाठ के

बानी रालिजावेद के दर्जों की परेशानी
यह थी कि बानी रालिजावेद ने
नेपाल, भारत, सिएमिन के दौरे पर
जाना था जिसमें उन्होंने किन परिदृश्यों
को ध्वसण करना है तथा उनके वरन्
किस प्रकार के होने चाहिए, यह परेशानी
जो बानी रालिजावेद के दर्जों की थी
यह तर्कसंगत थी क्योंकि दर्जों का
उल्लंघन बानी की साज सज्जा था,



प्रश्न सं । ३ का 'ग' का उठः-

उठः - "मैं क्यों लिखता हूँ ?" के आधार
पर लेखक की निम्न प्रकार की
बाते लिखने के लिए प्रैषित करती हैं,

लेखक की सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक
आवश्यकता और लेखनीय कार्य
और साहित्यिक द्वेष में बान सम्मान
की महत्वाकांक्षा प्रैषित करती है।

जिसके माध्यम से वह क्षमाज में एक
प्रेषणादायी स्रोत बन सके।

खण्ड 'व'

प्रश्न सं० - 14 का 'क' का उ०

उ० :- चाणक्यः चन्द्ररुपस्य मंत्री
आसीत् ।

प्रश्न सं० 14 का 'ख' का उ०

उ० :- चाणक्यः उटजे निवासि चमः

'ह' का उ० :-

उ० :- चौराः कर्मलानि अपुर्तु चिन्तित
वतः ।

— • —

प्रश्न सं० 15 का 'क' उ० :-

उ० :- कूपं “अहं भूतयां नीचो आमी”
खेदं करोति ।

ख का 'उ०'

उ० :- कवि कूपं खेदं न कर्तुं कथयति

— • —

प्रश्न सं. - 16 का 'क' का उठ

उ०:- सज्जनाः गुणी रुद्र मृदु वाणी वक्ता
अवति,

'ख' का उ० :-

उ०:- कौत्सु वस्तन्तु शिष्यः आसीन् ?

'ग' का उ० :-

उ०:- गंगा हिमालयात् प्रवहति ,

— - .०- —

प्रश्न '।३' का 'क'

(क) सज्जनानां सद्गति सत्सद्गति अवति

'ख'

(ख) नीरक्षीर विवेकी हंसः आलस्यं त्वमेव
तनुषे चेत

'ग'

(ग) ते चोषक्यः क्षमा प्रार्थितवन्तुः

(घ) दुखः विना जोव सुखस्य बोधः

प्रश्न '१४' का 'क' (सांघि बुर्ज)

(क) ने + अनम्

<u>शब्द</u>	<u>सांघि</u>	<u>सांघि का नाम</u>
ने + अनम्	नयनम्	अग्यादी सांघि

'ख'

(ख) पितृ + आदेशः

<u>शब्द</u>	<u>सांघि</u>	<u>नाम</u>
पितृ + आदेशः	पित्रादेशः	टीर्थि सांघि

प्रश्न '१४' का ख

(क) स्वागतम्

<u>शब्द</u>	<u>सांघि विच्छेद</u>	<u>सांघि नाम</u>
स्वागतम्	सु + आगतम्	यता सांघि

(ख) पूष्टिन्दुः - पूष्टि + इन्दु

(गुण सांघि)

प्रश्न १४ का 'वा'

- (i) अनुचरः - अनु उपसर्व (अनु + चरः)
(ii) अधिभारः - आधि उपसर्व (आधि + भारः)

प्रश्न १९ का क

दात्रः - अहं दात्रः आसी,

खेलति - बालकः खेलति

कदा - त्वं कदा गमिष्यामि

संस्कृतम् अहं संस्कृतम् पठामि

प्रश्न ०२

(i) जल ही/जीवन हैं

(i) जल का जीवन में महत्व :-

हमारे जीवन में जल में विशेष महत्व है कहा जाता है कि जल नहीं है तो कुछ नहीं है अधित्रि जल के बिना जीवन सुंभव नहीं है जल के अभाव के कारण

प्राणी के जीवन की कृत्यना श्री नहीं की जा सकती है इसलिए पुराणों में श्री जल का महत्व स्पष्ट किया गया है,

'पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जूलमन्तं
सुश्माधित मूर्खं पाषाण खण्डैष् रत्नं
संज्ञा विद्धीयते'

अथवि हमारी पृथकी में तीन रत्न पाये जाते हैं। जब अल और सुश्माधित जौ मूर्ख लोग होते हैं। वे पर्यावरण में श्री भगवान को हृदय हैं।

(ii) स्वच्छ पेयजल :-

हमारी पृथकी में कुल 3/4 भाग पर जल प्राप्त है परन्तु उसमें पीने योग्य जल की मात्रा अत्यंत कम है आधिकारि मात्रा में भी मुद्री लवणीय जल विधिमान है।

इसीलिए हमें जल की धूताना - चाहिए हमारे शरीर में जल की मात्रा 70%. प्रतिशत होती है और इसके साथ चाहिए भी शब्दीय का का उचित प्रकार के क्रियान्वयन होता है। इसीलिए जल से अल का निर्भाग श्री होता है।

अन्नाद भवन्ति भूतानि पर्जन्याददन समव ९

इसीलिए हमें अधिकांश मात्रा में जल का सेवन करना चाहिए जिससे हमारे शरीर के अनेक कष्ट दूर होते हैं।

और हमें ग्रीष्म ऋतु में अधिक जल का सेवन करना चाहिए।

(iii) जल संरक्षण :-

जल संरक्षण का आवश्यक है जल की अपनी आवश्यकता को पूर्ति के लिए संग्रहित करना है।

जल के संग्रहण के लिए वर्षा झपड़ी जूल की ओर संग्रहित किया जा सकता है। और खेतों की सिंचाई तथा अन्य शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

जल संरक्षण करने के लिए सारत के अनेक बाज़ों में जल संग्रहित किया जाता है। सारिधान में हटों के ऊपर एक टूबनुमा संरचना में जल की संग्रहित किया जाता है।

जल की संग्रहित अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

(iv) प्रदूषण और उसके व्याव

आजकल जल का अत्यधिक दुरुपयोग हो रहा है तथा जल की अत्यधिक प्रदूषित किया जा रहा है।

जल प्रदूषण का अर्थ:-

जल प्रदूषण का व्याख्यिक अर्थ हीता है जल की प्रदूषित करना और हम अपनी मानवीय गतिविधियों के द्वारा गंधा किया जा रहा है।

जिससे हमारी प्रतित्रिवेदी भाँगा प्रदूषित हो रही है आ गंगा हमें स्वस्थ जल प्रदान करती है परन्तु मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा वे प्रदूषित हो रही हैं।

व्याव:- प्रदूषण की दोनों के लिए हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सन् २०१४ की 'नमामि गंगा', परियोजना चलायी।

जिसका मुख्य केन्द्र उत्तरप्रदेश से कंव गंगा के प्रवाह क्षेत्र है यह अब तक चलाये जाने वाली गंगा के स्वस्थ मिशन है।

प्रदूषण की व्यापने के लिए नदियों
का प्रदापित बही करना चाहता

जल ही जीवन है,